॥ श्री महादेवो वाच ॥

कश्चैवकेवलंब्रह्म, बीशेषबीजमव्ययं ॥
अन्तरबहिरंतरे, यत्कबीरस्सचोच्यते ॥१॥

॥ टीका कबित्त ॥

कहत ककार जासो केवल सो ब्रह्म जानो, मानो बी शेष बीज अक्षर जगत को। जेते ब्रह्माण्ड पिण्ड आदि अंतमध्य तहां, रमत रकार झनकार है भगति को ॥ भावी भूत भवतव्य तीनो अक्षरते न्यारो नाही, सही यही बात प्रमाण बेदमति को ॥ ताहिते कहत है कबीर तीन अंकजोरि, मोरि मोरि औरही कहैंगे ते अगति को ॥ १ ॥

मूल

क ब्रह्मेषु नामेषुबी, बिद्यमान बिशेष्यते ।
रमंतेसर्वभूतानां, यत्कबीरस्सचोच्यते ॥२॥

टीका

जल में कबीर और थलमें कबीर, पांच तत्व में कबीर तीन गुण में कबीर है । बि-द्यमान जानों यों बिशेष अवशेष नाही, रहे कैसे

निशि दिन ज्यों दृगन मे नीर है ॥ स्थावर औ यंगम के जेतें जीव जगत मांझ, रह्यो भरपूर जैसे जड़ित जंजीर है । ताही ते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि मोरि औरही लगावे सो अधीर है ॥ २ ॥

मूल

कःसुखसागरोदाता, बीजज्ञानतथैवच ।
रहितांआदिअन्तेन, यत्कबीरस्सचोच्यते३

टीका

कहत ककार सुखसागर दातारपति, ध्यान के साजन गुरुज्ञान बीज बानी है । रटत रकार सो रहित आदि अंत मध्य, कहत चाहत जाकी अकथ कहानी है ॥ गुंगेके सो गुड़ जोईखाय सोईस्वाद जानै, चुप चाप ह्वै के कछु बात न बखानीहै । ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, मोरि मोरि औरही कहैंगे ते अज्ञानी है ॥ ३ ॥

मूल

कस्तुकायापतिश्चैव, बीशेषंसमितिंजयं ।
रकारंरातिसर्वस्य, यतकबीरस्सचोच्यते४॥

टीका

थलचर अस्थावर यंगम जगतमांझ क, बीवर सबके काया को अधीश है । बिवि-धि विलास हास समता जपाय यश, छाजत अकाश छाया दृग की कशीस है ॥ राजत रकार रति राग अनुराग सदा, जगत बिभाग कहुतनक न ईश है । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २ और भापे सो तोमूढ़ विस्वेबीस है ॥ ४ ॥

मूल

कस्तुवायुरजश्चैव, बिज्ञानंज्ञानज्ञीयते ।
रसनाध्यायतेनाम्ना,यत्कबीरस्सचोच्यते५॥

टीका

कंज जैसो फूल्यो इंगला पिंगला के मांझ पैठि, अज है पवन सो आकाश वाही अंक है । बिविधि प्रकार ज्ञानी गावत ज्ञान वाही, ध्यानी धरे ध्यान भृकुटि के बीच बंक है ॥ वाही ररंकार झनकार करे आठो याम, रसना रटेते नाम कटत कलंक है । ताहिते

कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि मोरि
और ही कहे ते यमशंक है ॥ ५ ॥

मूल

कापियूषरसाधीशो, बीतृष्णामोहनाऽकृतं।
रक्षतेखिललोकानां,यत्कबीरस्सचोच्यते ६

टीका

कहत पियुपरस सागर अधीश वाही,
सुखकी लहरि लहरत आठो याम हैं। वाहि
जो विहारी विहरत वंकनाल बीच, तृष्णा
मोह जाल ताको अमि निज नाम हैं ॥ भू-
आदि लोक पाल अतल आदि अंक जेते,
तेते मांझ रक्षक प्रदक्षक सो धाम हैं। ताहि
ते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २
और कहैं ताने जान्यो नहि राम हे ॥ ६ ॥

मूल

क करुणामयोसिंधु, विमुक्तोमनस्थिरं ॥
रसास्मरश्चयोगेषु, यत्कबीरस्सचोच्यते७॥

टीका

क करुणा को सुख सागर अगाध

राजे गाजे, दिनरात वाजे दुंदुभी अपार है।
विविधि प्रकार जो विचारे त्रकुटी के मांझ,
मनसा विस्तार ताने दीसे कर्तार है॥ वाही
जो रकार योग रण संग्राम सदा, कामादिक
बैरिन को करत प्रहार है। ताहिते कहत हैं
कबीर तीन अंक जोरि, मोरि मोरि और
भाषे ताने जान्यो नहि सार है॥ ७॥

मूल

कःकामाद्यखिलानां, बींविहंगजितेन्द्रियाः।
रमायनिगमार्श्चैव, यतकबीरस्सचोच्यते८॥

टीका

ककाकामनाको देनहारो है जगत मांझ,
बबा त्यों विहंग सब इन्द्री जीतवारहै। रमत
रकार चारो बेदन में धार धार, बार बार
कही सही वाही कर्तारहै॥ नाद और बिंदक
कशीशहै जोरि देखो, मोरि देखो घोटिक
को घाटी घनसारहै। ताही ते कहत हैं क
बीर तीन अंक जोरि, मोरि मोरि औरही
लगावे सो गंवार है॥ ८॥

मूल

कःकंदर्पोविष्यामुक्तां, दयायुक्तौरनामयो ॥
सत्यरत्नसमायुक्ता, यत्कवीरस्सचोच्यते९॥

टीका

ककाकंदर्प जासो वीर्य्य कहत कोऊ, उलटि चढावे जो वढावे यों कपाल मे । विविधि विलास के विषयन ते बिमुखह्वै, ड़ारे अघधोय खोय लोकलाज हालमें ॥ दया युक्त ह्वैके त्यों निरोगी देह पायके, वही रत्न डर लेके रहै रटत हवाल में । ताहिते कहत हैं कवीर तीनी अंक जोरि, मारि २ और कहैं जे ततो जायहैं यम जालमें ॥ ९ ॥

मूल

कंतुचिंतामणिप्रोक्ता, विविधिमहिमानया ।
रचितोसर्वलोकानां,यत्कवीरस्सचोच्यते१०

॥ टीका ॥

हीरा मोती पन्ना औंर अक्षर निहारो सर्व, वही जो ककार चिंतामणि को अकार

है । बिबिधि प्रकार महिमा के जिते जाल, तिन्हे जानत मराल संत वही जो बकार है ॥ रचित रकार सो जटित सब लोक ओक, वाकी कलानि माँझ रटत रकार है । ताहि ते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २ और कहे सूझे नहि वार पार है ॥ १० ॥

मूल

कः कल्पद्रुमसत्येषु, बिशदं भावसाक्षणं ।
राजतिनिःअक्षरश्चैव, यत्कबीरस्सचोच्यते ११

॥ टीका ॥

बेद निज अंकन को नाग गुने अंक जे ते, तेते और वृक्ष यों ककार कल्प तरु है । बिबिधि बिशेष भाव साक्षी है जगत मांहि, अगर रस चोआ माझ जानियो अतरु है ॥ राजित रकार सब अक्षर रहित जैसे, विद्युत प्रकाश के अकाश भास भरु है । ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, मोरि २ और कहै सोतो महानीच नरु है ॥ ११ ॥

मूल

कश्चकलाकरोत्येवं, बिवेकाललनामयं ।
रसभारामृतायेन,यत्कबीरस्सचोच्यते १२॥

टीका

घटत घटावत वढावत बढ़त जैसे निधि, ककलाते त्योंहि जगतब्यवहार यों । बिवेक संबन्धिनि सुबुद्धि जासो कहैं कवि, रसके लह रिकी समूह रंकार यों॥ दशो द्वार घेरेपुनि छहुद्वार हेरे धनी, पैठि बीच टेरे निरेदूर दरबार यों। ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, तोरि तिनुका सो जग होय भवपार यों ॥ १२ ॥

मूल

कःकर्मोद्धारमेतेषु, विरंच्यो मुक्तिमार्गणं ॥
रसनासिन्धु नामेषु,यत्कबीरःसचोच्यते १३

टीका

कर्म उद्धार जो ककार थिर चर मांझ विधिहुकी मुक्ति सो पंथपार प्रमाण यों। रसना के मूलमे पियुष सिन्धुराजे गाजे, निसिदिन बाजे बिमुतार कर्तार यों॥ इन्द्री दशो घेरि दशो

द्वार एक जेरि त्रिकुटि के भांझ हेरि लसे गंगा जी को धारयों। ताहिते कहत है कबीर तीनि अंक जोरि, मोरि देस्वास दिसै सिर्जनहार यों ॥ १३ ॥

॥ मूल ॥

कलाकीर्तिगतोयेन, बिलासीसत्यलोकक: ॥
रसवंतसमासेन,यत्कबीरस्सचोच्यते॥१४॥

॥ टीका ॥

कलन की कीर्ति क्लेश बेलि खंडवे को, बिपति बिहंडवेको कहत प्रचंड यह। बिबिधि बिलास सत्य लोक आस पास, मंद हांस के प्रकाश कोटि भास करै दण्ड यह ॥ सोइ रसवंत रस रूप को स्वरूप जानै, तानै जब कठिन कराल को दण्ड यह। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, और २ कहै ताको सुकृत बिहंडयह ॥ १४ ॥

॥ मूल ॥

क:करुणामयोकाया,बिबिधौभावाबिशारद:।
रमंतयतस्समोतेषां,यत्कबीर:सचोच्यते १५॥

टीका

करुणा को सागर उजागर है काया माझ
कौन, धसि देखो अवरेखो दशो द्वार यह।
बिबिधि भाव को विशारद है आठो याम,
तजि धनधाम जो बिचारे वार पार यह॥
रमत रमावत रहत दिन रैनि ऐसे, जैसे प्रमा
न है झरोखा के मझार यह। ताहिते कह
त हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि और क
है सो तो भूल्यो निज सार यह॥ १५॥

मूल

कःकमलोदयोबासी, विकारो दुःख नाशनं॥
रयोरसात्मयायेन,यत्कबीरस्सचोच्यते १६॥

टीका

कमल ते भयो जे प्रकाशी बिधि नाम
जाको जगत बिलासी तासु कहत कर्तार य
ह। बिबिधि प्रकार के बिकार दुख नाशवे
कूं कामादिक फांसवे कूं करवत कुहाड़ य
ह॥ तीनो गुण राजत रकार मांझ माया बा
द अति अह्लाद रस सागर को सार यह।

ताहिते कहत है कबीर यह तीनि अंक जोरि, मोरि और भाषै सो तो छिति पर भार यह ॥ १६ ॥

मूल

कःकलिमलबिध्वंसो, अक्षय वृक्षसनामयं॥
रसनासत्यभावेषु, यत्कबीरस्सचोच्यते १७

टीका

कहत ककार कलिमल निस्तार जो पै कामादिक भार छार छार करि डारै जब। दुर्जन के वृक्ष भव कानन बिदारवे कूं ब्रह्म हि बिचारवे कूं क्षमा उर धारे जब ॥ रसना उचारे सत भाव पण पारे हानि को बांधि बिदारै काम क्रोध मेटि डारै जब। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, हांसि मुख मोरि लोक लाज को बिडारे जब ॥ १७ ॥

मूल

कःभवसिन्धुकैवर्तो, बिबिधोअघदाहकः ॥
रकारंकेशवानामः, यत्कबीरःसचोच्यते१८

॥ टीका ॥

कका कैवर्त भवसागर उतारे पार,

विविधि प्रकार अघ जारन बकार तब। केशव को केवल सो नाम रकार जाने ताही को बखानै भव होय वार पारतब। दान व्रत तीर्थ बिधान योग यज्ञजेते, ते ते कह्यो श्रुति मांझिं नामही को लार सब। ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, मोरि २ और कहै बूडे कारी धार तब ॥ १८ ॥

॥ मूल ॥

कुमुदांप्रियमानेषु, वीविचित्रःइतिहास्कं ॥
रसिकारसशास्त्रैषु,यत्कवीरःसवोच्यते॥१९

॥ टीका ॥

कहत ककार सो कमल को अकार उर सबही को प्यारो है उजारो ज्ञानी जन को ॥ कहत हैं विचित्र इतिहास किते बेद मांझ रसकी स्मृति सुख दाता तन मन को ॥ ताहि जो न गावै सुख पावै कहो कौन भांति मुक्ति को धावै नहि पावै एक कन को। ताहि ते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मेरे ऐसेही कहै सो तो सांचेपन को ॥ १९ ॥

॥ मूल ॥

कःकुन्दोस्मरतस्तेषां, विहर्तुंसुखसागरात्॥
रहस्यामरलोकेषु, यत्कबीरःसचोच्यते॥२०

॥ टीका ॥

कुमोद में प्रकट है के सुमिरत हैं विधि जाहि सोइ है ककार निर्धार उर धारिये। सुख के समुद्र माझ अचल बिहार जाको बिचल न चित्त ताको अंचचल निहारिये॥ रहस्य बताऊं एक राजत अमर लोक लखि के रकार तन मन धन वारिये। ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि कोरि २ अक्षर निछावर करि डारिये॥ २० ॥

॥ मूल ॥

कल्याणानांनिधानंच, विभागंचशुभंप्रभु॥
निर्मूलानांतरंब्याधि,यत्कबीरःसचोच्यत२१

॥ टीका ॥

कका कल्याण को निधान खानि जानि लीजै बबाते विहंग को स्वरूप उर ध्याइये। रहत निरंतर निर्मूल ब्याधि खंडवे

को विपत्ति बिहंडवे को ररंकार गाइये ॥ सोई निज साधु जानै मिगम अगाध मतो याही को लखे ते थिरता को पद पाइये । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि मोरि और कहै ताको मुख न दिखाइये ॥२१॥

॥ मूल ॥

कलिकर्म विनाशंच, विमलोमन निर्मलं ॥
रागद्वेषविनिर्मुक्तो, यत्कवीरस्सचोच्यते २२

॥ टीका ॥

कलि के जे कर्म तिन्है करत बिनाश कवि छविको कमल फूले हियेमे किलक्यो है । विमल २ निर्मल मनह्वै ऐसे जैसे मीन वारिधिमें चन्द को बलक्यो है ॥ राग अरु द्वेष सो विशोक ह्वै रकार माझ लखि तेज पुंज रहे हृदय में झलक्यो है । ताहिते कहत हैं कवीर तीनि अंक जोरि मोरि तोरि तात बंक नाल मे खिलक्यो है ॥ २२ ॥

॥ मूल ॥

करुणार्णवोयोतश्च, विस्तारोसतनामयो ॥
रचितोगुणनामैश्च, यत्कवीरःसचोच्यते २३

॥ टीका ॥

करुणा को समुद्र मांझ कहत जहाज़ जासो, सोई है ककार चढ़ि क्यों न पार हूजिये। सत्त संधानहीं को नाम बिस्तार उर, विविध प्रकार धाय धाय वही धूजिये ॥ रचित रकार गुण नाम को प्रमाण सब, ह्वै के कोकिला सजग बन मांझ कूंजिय। ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंकजोरि, मोरि चित डोरी तोरि जग पगुमूजिये ॥ २३ ॥

॥ मूल ॥

कंक मणिसर्व भावेषु, बिसर्ग सर्व भावनः॥
रसाशांतोसमाधानां, यत्कबीरःसचोच्यते २४

॥ टीका ॥

कहत कंक मणि सब पावन मे जांसो कवि, ताहिवा ककार में अनेक छबि छहरे। बिगरे प्रपंच वाहि ऊषमा की अंचनि सो, फिर ढ़रि आवै रुप सागर की लहरे ॥ रस को समूह समाधान है रकार यह, बिहर बिहर बंक नालहि में थहरै। ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, मोरि और कहैं

पैं भव माझ भहरै ॥ २४ ॥

मूल

कथितो गुणवानेषु, बिजया जय संग्रह ॥
ररंकारध्वनिस्तेषां,यत्कबीरस्सचोच्यते २५

टीका

वही गुणवान जासो कहत गुणीलै लोग, वही योग भोग जासो कहत ककार है। वहीहै बिजय जग जुरै जैतबारनि में, वही पारजाय जाको नाम यो बकार है ॥ वही ररंकार राति द्यौस ध्वनि लागी रहै, जागि रहै ज्योति सोई दीसे बारपार है। ताहीतैं कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २ कीनो जग कानन कुहार है ॥ २५ ॥

मूल

कर्मण कर्म निहारी, बिहारी रति बर्द्धन ।
रविरयं राजतेयो, यत्कबीर:सचोच्यते २६

टीका

कही निज कर्म तासो कटत बिकर्म सब, तबहै असंक गावे केवल ककार को ।

बिबिधि बिहार केते रतिके बढायबे को, चाहो उरहार तो बिचारो वा बकार को ॥ वहि सर्वऊपर बिराजै रवि राजै तैसे, निसादिन बाजे गाजे जान यों रकार को । ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, ऐसेही लगावै ते प्रस्थान करै पार को ॥ २६ ॥

मूल

कालि नाम प्रयं प्रोक्तं,बिबर्ण योग धारणं।
रागद्वेष परित्यागः, यत्कबीरःसचोच्यते २७

टीका

कालि मांझ केवल सुनामही बतायोसार, वही जो ककार धार धार करि गाइये । आठहु प्रकार योग धारण कहत जासो, बहत बकार श्वांस ग्रास गहि लाइये ॥ रागअरु द्वेष को बिसारि डार वही, सोई बिषय को निवार एक ररंकार ध्याइये । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, कोरि कोरि कृपा पूरो गुरु मिलिपाइये ॥ २७ ॥

मूल

कमलो भवंशभूतौ, वीक्षत मृदु मंजलम् ।
सामर्थेसर्वलोकानां,यत्कबीरस्सचोच्यते २८

कमल पर वासी है बिलासी कर्तार जासो, कहत विरंचि एक ककाही को नाम है ।कुटिल कटाक्ष मृदुमंजुल चितवौनि जाकी, बिविधि बितौनि विहरत आठो याम है ॥ लोक परलोक सामर्थ रस भानको रटत र कार सब करे पूरो काम है । ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, मोरि मोरि स्वा स केते गये परम धाम है ॥ २८ ॥

॥ मूल ॥

मुक्तिमार्गबिनोदश्च, भक्तिमार्गललामयो॥
रसनामृतमूलेषु, यतकबीरस्सचोच्यते २९

टीका

मुकुति को पंथ वही कहत बिनोद वाहि, केतेक अमोद रहैं ककाही केमाहि बासि । भ-गति को मारग ललाम अति सरल जानो, कहत वकार धरो ध्यान दिनसांझ बसि ॥

रसना के मूल में रकार बसे सुधा जोपै,
नेकहु न पीयोरही मातो क्योन बांझ बसि ।
ताहि ते कहत हैं कबीर तीनअंक जोरि
कोरि २ भलो भावै चाखो एकै झाँझ बसि २९

मूल

कर्णिका सर्व जगतः, विचारो सार एवच ॥
रटंतरामरामेति,यत्कबीरस्सचोच्यते॥३०

टीका

सबतेशिरेहैज्गोंप्रशन्यपरकर्णिकाजकारणककारसब
यग्यनिस्तारहै ॥ कहत बकार सो बिचार करो
बार बार, जन जगमाहि जानो मानो सारासार
है ॥ राम राम रटबोहै आठो याम जोई सोइ,
निज नाम ध्यान धाम सोई जानिये रकार है।
ताहिते कहतहै कबीर तीन अंक जोरि; मोरि
मोरिभाषै और नरक निर्धार है ॥ ३० ॥

कुमोदनिर्यदाभावो, बिमलोचसूक्ष्मांगति॥
धारणां शुभलोकानां, यत्कबीरस्सचोच्यते॥

टीका

ककाही कुमोदिनी कोभाव निशिजानि

लीजै, ववाही बिमल मति सूक्ष्म बखानिये। धारना सुलोक शुभ कहत रकार जासो, करि चित्त ध्यान ज्ञान सु रति शर सानिये॥ कहत विचारि के उचारि साधु लक्षणा ये, करि उर स्वास ऊंची दृष्टितर तानिये। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि यों लगावै ता सों चित दे बखानिये॥ ३१॥

मूल

कंटकंतोविनिर्मुक्तो, बिश्वासो स्वासएवच
रमंतसर्व भूतानां, यत्कबीरस्सचोच्यते ३२

टीका

कंटक अटक सो विमुक्त है ककार यह, सांची गति जानो मानो देखेहि सत्याइये। करिविश्वास श्वास खैंचि के अकास धरि, लरि लरि काल सो बकार रस प्याइये॥ रमे सबही में आये देखत न नेक कोऊ, दोऊ डोरि एक करि त्रिकुटी लखाइये। ताहीते कहत हैं कबीर तीनअंक जोरि, मोरु नाद बिन्द अरु चन्द सो लगाइये॥ ३२॥

मूल

कैवर्त सर्व लोकानां, विदेहरी बिशत्यपि ।
रजनीभावंउत्साहं,यत्कबीरस्सचोच्यते३३

टीका

भूर भूआदि लोक जेरसातल लो, तेई भवसागर कैवर्त यों ककार है । देह जासो कहत विदेह सन्त ताहि, उर लेके करोगेह घनसार है ॥ ररकि ररकि रजनि को है समूह सुन्य, सान अबसान को कृसान को दरार है । ताहिते कहत हैं कबीर तीनअंक जोरि, मोरि क्यों न करो जोई सोइ करार हैं ३३

मूल

कपटस्या पटंछेदा:, बिचारो परमार्थक: ॥
रागद्वेषबिनाशंच, यत्कबीरस्सचोच्यते ३४

टीका

कपट पट छेदा औ कुबुद्धिनको बेधा काम् क्रोध कोबिभेदा खेदा कलिको ककार य ह । सहित अचार है बिचार प्रमारथको, स्वा रथ को सोदर सदाहर बकार यह ॥ राग

द्वेष नाशै यमहूको आश पाशै हरै, हरि उर गांसे तन सासे यों रकार यह। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २ घोरि कोरि २ घनसार यह ॥ ३४ ॥

मूल

कैवल्यो भवसारुप्यं, विद्याकृति बिवर्द्धनं॥
रत्यतंगुरुज्ञानेषु, यत्कबीरःसचोच्यते ३५॥

टीका

चारहु मकार को मुक्ति जे जगत माझ, तिनमे स्वरूप जो क रुप वही जानिले। चौसठ कलाहै जेते विद्याको प्रधान् आन्, कीरति वढावन् बकार उर मानिले ॥ वही गुरू ज्ञान जामे रहत विवेक प्रण, कीरति गतिमुक्ति है रकार छिति छानिले। ताहि ते कहत है कबीर तीन अंकजोरि, मोरि त्रिकुटी के छिद्र माहि शर सांधिले ॥ ३५ ॥

मूल

कथितो ज्ञान ध्यानेषु, बीजमंत्र सुसग्रहं।
राजिवलोचनंस्नेहा,यत्कबीरस्सचोच्यते३६

टीका

ज्ञान में कह्यो है वही ध्यान में कह्यो है
वही, श्रुति में वही है वही सुमृति ककार माथि,
बीज में कह्यो है वही मन्त्र में कह्यो है वही,
यंत्र में कह्यो है वही तंत्र में बकारमाथि ॥
जीव मे वही है दोउ दृग में बही है, सांचैनेह
में वही हे धुतिदेह में रकार माथि। ताहिते
कहत हैं कबीर तीन अंकजोरि, कोरि में
वही है तृणतोरि में अकार माथि ॥ ३६ ॥

मूल

कुरुतेज्ञाननीतिंच, विमलांनिर्मलांमतिः ।
रमतिरमणीयम्‌सदा,यत्कबीरस्सचोच्यते३७

टीका

ज्ञानही की नीति के ककार करेनिशि
दिन, बिमल सुनिर्मल बकार बाणी बर है।
रमत रमणीया सदा चारो में प्रगट यह, देह
देही गेही में अदेहही की घर है ॥ करो न
बिचार सन्ताहिय में स्मरणताकी, रह्यो भर पू-
रन अफर धारा धर है। ताहिते कहत हैं

कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २ नाशिका के बीच में रफर है ॥ ३७ ॥

मूल

कल्याणां सर्वहीनेषु, विनोद सुखसागरः ॥
सामर्थोंसर्वहंसानां, यत्कबीरस्सचोच्यते३८

टीका

दारिद पछांरि तिनुका से तोरि डारे तिन्हे, करत निहाल जैसे भूधर ककार यह । अतिरस मोद है विनोद सुखसागर सो, सब गुण आगर सो नागर बकार यह ॥ हंसनमें कह्यो सो परमहंस सामरथ, वही गति को गरंथ सो अर्थ रकार यह । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मारे सब कुमति विदारे काम अरि यह ॥ ३८ ॥

मूल

कर्मणांकुरुतेनास्ति, विवेकः ज्ञानसंभवः ॥
रतिसंसारकत्यागिः,यत्कबीरःसचोच्यते३९

टीका

करे कर कर्म औ विकर्म किते काटे

हाल, करत निहाल सोई कका करतार है। अनुभौ बिवेक जासों ज्ञान बिज्ञान कहे, सकल सयान को सयान यों बकार है ॥ रति है संसार के बिकार त्यागवे को सब, जागवे को भंवर गुफा में ररंकार है। ताहिते कहत है कबीर तीन अंक जोरि, मोरि क्यों न देखो हिये बडो निजसार है ॥ ३९ ॥

मूल

कठिनाकोमलात्यागी, व्यबहारी जगद्भवं।
रहितोपुण्यपापाभ्यां, यत्कबीरस्सचोच्यते४०

टीका

कठिन है कोमल है मृदुहै मयंक मुख, सुख दुख तूरन है रह्यो भरपूर है। जग को जनेता व्यवहार को बनेता वही, कबि कहैं केता सो बिभेता चकचूर है ॥ न्यारो मख मल तैसो अक्रो अरिदल त्यौंहीं, मारो छलबल ते प्यारो घरते न दूर है। ताहि ते कहत हैं कबीर तीनि अंकजोरि, नेक मुरि देख तेरे हिये में जहूर है ॥ ४० ॥

मूल

कल्पितोवैरनिर्मुक्तो, बिनाशोसर्वतोभयो॥
रतिज्ञानमवाप्नोति,यत्कबीरस्सचोच्यते४१

टीका

मित्र अरु बैर भाव कल्पित कहे हैं, दोऊ,
करो निरधार कोऊ ककाजुदो जानिल्यो।
ज्ञान औ अज्ञान यों उठाये धरे दोऊ जहाँ,
बबाही विज्ञानरूप भक्त भूपमानिल्यो ॥ वही
रति ज्ञानको रमावे दिन रैन कहूँ, सोई चित
चायसों उठाये हिय आनिल्यो। ताहिते क-
हत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि दग अं-
श को सुहंस घट छानिल्यौ ॥ ४१ ॥

मूल

कलेशाश्चकृतेनास्ति, बिद्याफलंशमंचित ॥
रसाभ्यासेनकर्तव्यं,यत्कबीरस्सचोच्यते४२

टीका

जिते जग पाप के पटल लपटाये अंग,
करै क्षण भंग कलि केवल ककार घर।
जेते जगमाहि वेद विद्या के विपाक फल,

सोधि २ बोधि के बतायो है बकार घर ॥
रसको अभ्यास जिन करे छिन एक संत,
वही निज कन्त जासो कहत रकार घर ।
ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि,
मोरि २ तनुबेलि गाय सामधार घर ॥४२॥

मूल

कलातीतं स्वभावेषु, गुणातीतं सुविग्रहं ॥
तुरीयापदमाप्नोति,यत्कबीरस्सचोच्यते४३

टीका

चन्द की कलाते और सूर की कला तें न्यारो, दामिनी कलाते सो कृसान ते ककार भिन्न । गुणन ते न्यारो जाको कहत स्वरूप साधु, निगम अगाध दुराराध है बकार भिन्न॥ जागृत औ स्वपन सुपूपति के आगे वढ़े, तुर्या माहिमढ़ै चढ़ै ररकि रकार भिन्न । ताहिते कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि,मोरि २ दशोद्वार जोरि दे अकार भिन्न ॥ ४३ ॥

काल ज्वाल परित्यागी, वेदमंत्रं सुसंग्रहं ॥
रमंतेआत्मज्ञानेषु, यत्कबीरस्सचोच्यते४४

टीका

कालरूपी व्याल ताके ज्वाल को है त्याग तहां, अति बड़भागी जानो कका· के मझार जू। विविधि ऋचाहैं जेते वेद में वतावे कवि, तिनके समूह वसे बबा निरधार जू॥ आप उर अन्तर में क्रीड़ा करे आठो याम, कहा करै दूजै एक कुंज ररंकार जू। ताहिते कहत हैं कवीर तीनि अंक जोरि, मोरि गति लाय कटै पापके पहार जू॥४४॥

मूल

कवयो सर्व चैतन्यो, संयुक्ते सर्व संग्रहः।
नामस्मरणमात्रेण, यत्कवीरस्सचोच्यते४५

टीका

कविन की बानी में प्रकाश करे आठो याम, सोई वह चैतन्य पुरुष है ककार थिर। संग्रह सकल गुण युक्त है सुमृत वही, रहै व- न्यो २ गुण सन्यो जो वकार थिर॥ नाम लै लै गावत विदाहत सकल अघ, रटि रटि रागन में रहत रकार थिर। ताहिते कहत हैं

कबीर तीन अंक जोरि, मोरि क्योंन देखो
हिये वसत अकार थिर ॥ ४५ ॥

मूल

कल्पांते नश्यतोनैव, सर्वभूत विमोहकृत ।
एकब्रह्म रमंत्येव, यत्कबीर स्सचोच्यते४६

टीका

नित्य मइमित्य पराकृत अतिअन्त चारु, प्रलै
के समूह में न विनशै ककार यह । आदि
अंतमध्य जेते जीव हैं जगत माँझ, सबही
को मोहे सो है समुझ बकार यह ॥ एक
ही पुरुष रमि रह्यो सब लोकन में, थिरचर
थावर बिथावररकार यह । ताहिते क-
हत हैं कबीर तीन अंकजोरि, मोरि क्यों न
देखे तेरे घटझनकार यह ॥ ४६ ॥

मूल

कायाविद्यामुक्तिज्ञाने, बीतरागभयार्ज्जवं।
अघनोदहनानाम, यत्कबीरस्सचोच्यते४७

टीका

काया हू को जानै अरु माया हू को जानै

वही, मुक्ति हू को जानै अरु भुक्ति को ककार वह। राग अरु द्वेष तैं विमुक्त सदा न्यारो रहे, सहे दिन रातिन के वहम बकार वह॥ अघ के जरायबे को दाहक सदा हे उर, रति के रमायवे को राजत रकार वह । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरिं, मोरि क्यों न देखो त्रिकुटी मे सोमधार वह ॥ ४७ ॥

मूल

ककुंधो श्रुतिविद्वानं, सिद्धिर्भवति सर्वदा।
रचना सर्व संपूर्ण, यत्कबीरस्सचोच्यते ४८

टीका

कमल कह्यो है वही श्रुति औ सुमृति मांझ, ध्यान धरिवे को एक कका निरधार है। सिद्धि जितनी हैं जानि लीजिये जगत मांझ, तिनहूँ को आदि बीज दिनू दिन वकार है॥ रचना रचन सब जीवन जगत मांहि, पूरन प्रताप अघताप सो रकार हे । ताहिते कहत है कवीर तीन अंक जोरि, रंचक ज-पेते कर्म कटत पहार है ॥ ४९ ॥

मूल

कलाब्रह्मसमाख्यातो, करोतिविकलाकला।
रहितोमोहशोकाभ्यां,यत्कबीरस्सचोच्यते४९

टीका

कलाजितनी हैं जग ब्रह्महिविचारि लीजै, कहैं नेति नेति नित वेदन ककार माँझ । बिक-ला बिकाश जेते बिविध प्रकाश अव, कहे हैं हुलास तेते बास है बकार माझ ॥ रहित कह्यो है मोह शोकते प्रसिद्ध वही, रमक झ-मक सब देखिये रकार मांझ । याही ते कहत है कबीर तीनि अंकजोरि, मोरि क्यों न देखो सव जगत अकार मांझ ॥ ४९ ॥

मूल

कमलंअमलंनित्यं, बिभागभागमुच्यते।
रसनानित्यंनामेषु, यत्कबीरस्सचोच्यते५०

टीका

कमल अमल गंध दिन् दिन बसत जामैं, छिन २ हंसत बिकसत है कक्कार माहिं। गुणके बिभाग भाग बिबिधि प्रकाश जेते,

तेते सब जानिलीजै अचलबकार माहिं ॥ रसना रटत जाको नाम दिन रैन नीके जगमगे ज्योति द्युति होत है रकार माहिं । याहिते कहत है कबीर तीनि अंक जोरि, मोरे क्यों न देखे सदा हाजिर अकार माहिं ५०

मूल

करुणारूपसिन्धुश्च, सत्यनाम विभागवित्
भक्तिमुक्तिरतुनित्यं, यत्कवीरस्सचोच्यते५१

टीका

करुणा के रूप औ समुद्र वही जान सदा, न्हाये गुणगाये देवहाये अघ ककार सो । वही सांचो नाम सवे भाग औ विभाग माहि, भरि भरि वहरै विडारै है वकार सो ॥ भक्ति औ मुकुति में अत्यन्त रति जान्यों जाकी दिन दिन सानो आनो भाव ररंकार सो । याहिते कहत हैं कवीर तीनि अंक जोरि, तोरि जग रीति प्रीति जोरि ये रकार सो-५१

कलेश दहनं नित्यं,वियंत स्वजना जना ।
रसनायारसंवाक्यं,यत्कवीरस्सचोच्यते५२

टीका

कलि के कलेसन जरायवे को पावक है, संत उरजावक है अचल सुहाग कवि। संतत सो विविधि विलास वनमाली वही वानी को अधीश्वर है ईश्वर विचारि विवि॥ रसना के वीच वसे सुधारस बास आछे, बचन बिलास हांस अमल प्रकाश रवि। ताहिते कहत हैं कवीर तीनि अंक जोरि, मोरि ज्ञान पावक हवन की जे कर्म हवि५२

मूल

कर्तारो अखिलाधारो, कालोसर्वंग विग्रहः रक्षाकरोतिसर्वत्र, यत्कबीरस्सचोच्यते५३

टीका

सकल ब्रह्मांड को अधार करतार सोई, सोइ निराधार है विचार विसतार कंक। सोई सव कालन को काल महाकाल जानो, सोई यमजाल है विहाल जगमग्यो बंक ॥ स्वरग पताल छितिहू में दशो दिशा सोई, रह्यो रमि रक्षक प्रतक्षक पुरान रंक। ताहिते कहत है

कबीर तीन अंक जोरि, मोरि देखो हियेमाहिं
अंकित अनादि अंक ॥ ५३ ॥

मूल

कलि काल निवारंच, बिवर्ण रति सर्वदा ।
स्वधर्मरतियच्चयंते, यत्कवीरस्सचोच्यते५४

टीका

कलिके कलेशन को तारत निषेध सो
ई जाको नाम कका जोइ जग करतार है ।
रतिके विनोदन को भागी है भवर सदा, य
ग्यवन घन वीच भवन वकार है ॥ रतिके
जे धर्म जिन्हैं पोथिन में गावें साधु, अगम
अगाध बंधे बंधन रकार है । ताहिते कहत
हैं कबीर तीन अंकजोरि, सत्य याहि मानो
जग झूठो व्यवहार है ॥ ५४ ॥

मूल

करोति शब्द सारेषु, कुसारे सर्व वर्जिताः ।
धारणाकुरुतेनित्यं,यत्कवीरस्सचोच्यते ५५

टीका

सांचे साँचे सबद किये हैं जामे बोनि

बीनि, छीन सब किये जगकरम ककार ने।
सार सार लीनो और कुसार सब धोय डार्यो
जग्य कीन्हे भरम पछारि कै वकार ने ॥
ध्यान धारणा धरत दिन रातिहू समुझि, भ्रम
सब डारे खोड़ जगके रकारने । ताहि ते
कहत हैं कबीर तीन अंकजोरि, मोरि डोरि
लावै ताकै जापै हम वारने. ॥ ५५ ॥

मूल

गत्य मोह रुपं सर्वं, कव शेष विवेकता: ।
रंमते सुसभामध्ये, यत्कबीरस्सचोच्यते ५६

टीका

मोहको गवावे रोग दोप ले वहावे सव,
भाव उपजावे ले पचावे काम कासना। विविधि
विवेकलै त्रिविधि ताप हंत करै, उरधरि
वाहि जनि लावो कोप बासना ॥ केते लो-
क पालन की सभामांझ राजे वही, वहीमंहि
मंडन अखंडन रकासना । ताहिते कहत हैं
कबीर तीनि अंकजोरि, मोरि २ और कहे
ताको मुक्ति आसना ॥ ५३ ॥

मूल

कर्वाणोजीवसंस्थान, विसर्गाःसर्वसंज्ञकः ।
शब्दरूपंसदाभासा, यत्कवीरस्सचोच्यते५७

टीका

ककाही सकल जीव संभव विचार लीजे, ववाही विसर्ग सब संज्ञाको अधीश है । वही है रकार शब्द रूप सो अभासे सदा, संतत प्रकाशे दृग आनन रुशीश है ॥ शब्द अरु सूरति संयोग में समाये रहे, कुरंभ की वृति गहे लहे वीसो वीस है । ताहिते कहत है कवीर तानि अंकजोरि, मोरि क्यों न देखो तेरे हिये जगदीश है ॥ ५७ ॥

मूल

ज्ञाननाथोक्रतीनाथः, मननाथोविभावसुः।
सर्वेन्द्रियसमाहारो, यत्कवीरस्सचोच्यते५८

टीका

ज्ञान औ विज्ञान मख तीरथ वरत दान सवही अनाथ नाथ जानिये ककार यह । मन वुधि चित्त अहंकार महाभूत पांचो, सब

कोमतो है कांचो सांचो है वकार यह ॥ शब्द रूप रस औ परस वस है सो नाहिं, अरस चढ़ायबे को दरश रकार यह । ताहिते कहत है कबीर तीन अंक जोरि, मोरि मुसकाये पाये गूँगे को अहार यह ॥ ५८ ॥

मूल

कर्तारोसर्वभावानां, विभासो श्रुतिसत्तमं ।
रमेत्यंचयदपिताषु, यत्कबीरस्सचोच्यते५९

टीका

ककाही कहतकरतार किते भावनि को, बबाही बिलासे अतिसागर केपार को। रमत रकार नायका मे भूप रूप ह्वैकै शोभित सरूप यों कुरूप करतार को ॥ विधि औनिषेध आछो बुरो येतो माया वाद, विविधि विषाद कियो माया और सार को । ताहिते कहत हैं कवीर तीन अंक जोरि, मोरिउ र खोजिले मतो है भवपार को ५९

कथितंकथनीयश्च, भवाब्धिव्याधिमोचनं
शब्दरूप सदामुक्तं, यत्कवीर स्सचोच्यतं

टीका

ककका हीकह्यो है कथनीय वारता के माहि, ववा व्याधि नाशवे को अति बल वीर है । शब्द औ स्वरूप सदा मुक्तिको हे भूपजोई, सोई घटघट माहिराजे रणधीर है, ब्रह्म शिव विष्णु केते कोटिन तेती सदेव, रहे जोरि जोरि हाथ वडी यहभीर है ताहिते कहत है कंवीर तीनि अंकजोरि नेकहुदया के कियेहरे पर पीर है ॥ ६० ॥

मूल

कंकलं केवलं सार्थं, विद्येशपरि कृत्तितः ।
सिद्धिःशुभसमासेन,यत्कवीरस्सचोच्यते६१

टीका

औंर युग माहिं योग यज्ञ व्रत दान जप, कलिमाहि केवल सो कका अर्थ सार है । विद्याहू को ईश योग यज्ञ के अधीश केते भोग को विलासी वही ववा व्यवहार है॥ रही आठो सिद्धि वा रकार माझ वसिनीकै, नवो निद्धि पीकै जीकै भयो भवपार है । ताहिते

कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरिं, स्वास को मरोरि त्रिकुटी में निरधार है ॥ ६१ ॥

मूल

कारणंशुभलोकानां, पूरणं पाद्य पल्लवं ॥
विहारीहरि वर्यश्च, यत्कबीर स्सचोच्यते६२

टीका

लोक शुभ करन धरण बल बुद्धि वही, उधरनजक्त अघ हरण ककार है। पूरण प्रताप पद पल्लवनलिन वही, करि मनअलिन्न दलिन यों वकार है विरहिनि माझ वही विविधि विहारी वन,वारी अघहारी नर नारी में रकार है। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि मोरि मन लाय देखो अमृत की धार है ॥ ६२ ॥

मूल

कर्तारंमायापरिश:, व्यक्ताव्यक्तसनातना
रमंतेसप्तलोकानां, यत्कबीरस्सचोच्यते६३

माया को अधीश वही कर्ता कहावत है, जासो कहै कका सो भै हक है जहान को।

गुप्तऔ प्रगट उभै धाम निरा धारन के, बसि वसि न्यारो है वकार उर आन को ॥ रमत रकार सातो लोकन में वार पार, विविधि विहार प्रतिहार है निसानको । ताही तैं कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, ऊँचे मोरि देख भासै चाँदनो सोभान को ॥ ६३ ॥

कर्मभ्रमपरित्यागी, त्यागीचिनयोहवाचनं
कर्मकष्टविमोक्षाणां,यत्कवीरस्सचोच्यते६४

टीका

करम धरम त्यागिवे को यों ककार कही, मोह काटिवे को अघकन्दन विवन्दयह । कर्म के विरिछ निरवारवे को आठो याम, झुकि २ झूमि २ घूमि २ रन्द यह ॥ गुणी गुण धारण विदारण कठिन काल,तन अघ जारन उधारन को कन्द यह । ताहिते कहत है कवीर तीन अंक जोरि, नेक मोरि देखहिये पुन्य को सो चन्द यह ॥ ६४ ॥

क्रांतियोशुभगाःभावा, विरूपानिरुपासकः
रसालोवृह्मनोज्ञयं, यत्कवीरस्सचोच्यते६५

टीका

कर्ता शुभगाथ धाम जायवे को साथ आये, ग्रन्थ शुभगाथ नाथ सांचो करतार कवि। विविधि विशेष रोग हरण अशेष वहि, श्रुति मुख देखि अनुपेखि लै बकार कवि वहि प्रति पाल है रसाल ब्रह्म कहै जाहि, धरि २ ध्यान ज्ञानी गावत रकार कवि। ताहिते कहत है कबीर तीन अंक जोरि, मोरि उर देखिहिये माँझनिज सार कवि ६५

मूल

कामक्रोधंतथालोभं, मोहमत्सरबर्जितं ॥
सरहस्यचिंतनीयं, यत्कबीरस्सचोच्यते ६६

टीका

कामते रहित क्रोध लोभ तैंरहित, मद मोह ते रहित माया रहित ककार यह। विविधि प्रकार के बिकार खंड खंड करि, डारें अघ देखतही प्रगट बकार यह॥ निरंजन भौन माहि चितवत संत जाहि, धरे धाय २ ध्यान रंचक रकार यह। ताहिते कहत हैं

कबीर तीन अंक जोरि, मोरि उर देखो तेरे हिये माझ सार यह ॥ ६६ ॥

मूल

कांक्षाकर्षणिकर्तारौ, मोहामर्षणविग्रहः ॥
रहस्येसर्वजीवानां, यत्कबीरस्सचोच्यते६७

टीका

जेते अभिलाष जग्य वासना विलास वाहि, करि कका मांहि वास होये जग पार त्यों । मोहसे नृपति को विदारवे को अस्त्र यह, शस्त्र काम जारिवे को धरिलै बकार त्यों ॥ दूरैतै, विराज सब जीवन मै आठो याम, करिले प्रकाश गुरु ज्ञान सो रकार त्यों । ताहिते कहत है क़बीर तीन अंक जोरि मोरि उर देखनेक कटै जगभार त्यों ॥ ६७ ॥

मूल

क़स्तुल्यंकस्मायुक्तः, बिस्तारोरनरक्षरं ॥
रमणीयःगुणज्ञाता, यत्कबीरस्सचोच्यते ६८

टीका

कौन जाके तुल्य थिर चर में विशेष

वही, युक्ति अनयुक्ति मैं विचारिलै वकार है।
जाको विसतार सब लोकन पसारो पर्‌यो,
रचि रचि धर्‌यो भाव भर्‌यो सो बकार है ॥
अति रमणीय सव गुणन को ज्ञाता वही, दा-
ता सो बिज्ञानको प्रधान यों रकार है ।
ताहिते कहत है कबीर तीन अंक जोरि, मोरि
क्यों न देखो सब जग में विहार है ॥ ६८ ॥

मूल

कलहोकल्पतश्चैव, विषमोनैवकामुकः ॥
रसज्ञोरसभावज्ञ, यत्कबीरस्सचोच्यते ६९॥

टीका

कलह की खानि कलि कंटक विकंट
वही, बंक उर अंक सोई कका को विचारि
लै। विषम को भाव तामें लेशहून नेककहूँ,
कामना अकामना सो बबा उर धारि लै ॥
जानत है नवोरस भावना सो नीको भांति,
भावउरधारि कै रकार मनमारिलै । ताहिते
कहत हैं कबीर तीनि अंक जोरि, मोरि २
स्वाँस बंकनाल में संभारि लै ॥ ६९ ॥

मूल

कायापाल दयापाल, शीलपाल हंसावहं ।
शुभकर्मणामाप्नोति, यत्कबीरस्सचोच्यते

टीका

कायाही को पालै निशिदिन दया पाल वही, करुणा को सिंधु अरु बिन्दु सो ककार यह । शील गति मिल्यो सनतोष झिलमिल्यो काम, क्रोध तिल मिल्यो बिल बिल्यो सो वकार यह । आछे शुभ करम भरम धर्म काँचे तहाँ, सव गुण साचे रंग राचे त्यों रकार यह । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मेरि वही देखि तोसूँकही बार बार यह ७०

मूल

कंठयानं समादृष्टि, विहारं सत्यकंकक: ।
रहितोकर्मसंयुक्ता, यत्कबीरस्सचोच्यते७१

टीका

कंठहि के पंथ मे बिवान बैठि ऊँचे चढ़ि, दृष्टि गुण माढ़ि वढ़ि ककाही के धाम को । वही सांचो लोक तामे करै जो बिहार सदा,

वाके वंक नाल, विचे धार्नि धरि बाम को ॥
करनी करम सब वरुनी उठाय डारी, मारि
के कुबुद्धि चित्त लायो नाम राम को । ताहि
ते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २
देख वाहि तजि और काम को ॥ ७१ ॥

मूल

कारणं सुखनिर्वाणं, विधि विज्ञान धारणं।
करांतिशुभसंतापं, यत्कबीरसचोच्यते ७२

तुरिया जो मोद ताको कारण करन हा
र, दुखको हरण हार जानिले ककार को ।
वेद भेद करि करि विधि सो बतायो ज्ञान,
विविधि विज्ञान ताहि मानिले वकार को ॥
शुभ को करैया वाहि अशुभ हरैया जान, भा
व को भरैया लखि लीजियो रकार को । ता
हिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि मोरि २
देखो हिये सिरजन हार को ॥ ७२

मूल

कुरुतेभृंगभावश्च, प्रबोधोजीवसंस्थितः ॥
निर्मूलंकुरुतेनित्यं, यत्कबीरस्सचोच्यते७३

टीका

जपि २ आपसों विलास करि लेतनीके, जैसे वह भृंगीकीट करत ककार त्यों। बोधकरे जीवको सुबोध सब जग मांहि, बचि २ बाम सो निधान सो बकार त्यों॥ निर्मल कहावे धोय मलको बहावे सोई, ध्यान को लहावे उर आवत रकार त्यों। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि मोरिदेखो उरसजत अकार त्यों॥ ७३॥

मूल

कृतांतक्रियतेभक्तिः;बिभक्तिचपरित्यजेत्॥
रमंतेनिर्मलंभावं;यत्कबीरस्सचोच्यते७४॥

टीका

जग सुखदाई भक्ति कारन है आठो याम, मलन विदारन है वारन ककार यह विबिधि कुसंग कलि कारन कलेश जेते, तेते अघहरण उधारण वकार यह॥ निर्मल है भाव जेते रमि रमि ध्यावही सो, मुक्तिपर पाव दे दे पायलै रकार यह। ताहिते कहत हैं

कबीर तीन अंक जोरि, नेकमोरि देख घट माहि टनकार यह ॥ ७४ ॥

मूल

कमलंकमलानाथं, ब्यक्तज्ञानश्चमव्ययं ॥
बिरक्तश्चैवरक्तश्च, यत्कबीरस्सचोच्यते७५॥

टीका

कमल कलीके माझ कमला को कंत वही, वही भगवंत जग ऊपर ककार है। प्रगट विशेष ज्ञान ध्यान के लगायबे को, हरि उरलाइवे को राजत बकार है॥ वही अनुरक्त औविरक्त सब जक्त माहिं, निगम विहारी जासो कहत रकार है। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंकजोरि मोरि क्यों न देखे तेरे हिये झनकार है ॥ ७५ ॥

मूल

कल्पांतेचसदानंदो, विलासोतीर्थव्रत्तयो ॥
रमंतेशब्दभावश्च, यत्कबीरस्सचोच्यते७६॥

टीका

कल्पही के अंत मे अनन्द है ककार-

र ही को,तीरथ बरत को विलासी सो वकारहै
शब्द के स्वरूप में विराजे अति राजे सो-
ई, मानुष में गाजै ऐसे बाजै सो रकार है
नीके कै विचारै उर धारै संतजन कोई, सो-
ई श्रुति सार कहै लहै वार पार है। ताहिते
कहत हैं कवीर तीन अंक, जोरि मोरि २
देखि पेखि अति सुख सार है ॥ ७६ ॥

मूल

करोत्याव्रतलोकश्च, विभक्तानांचरत्नयो॥
पापपुण्यपरित्यागी,यत्कवीरस्सचोच्यते ७७

टीका

जेते लोक लोक पाल व्योम पाल भौम पाल, ककाही को उरमांहिं सवही को जानि ले। भक्ति प्रतिपालक है बालक न बूढा वह, नर है न नारी ताहि ववाही में मानि लै ॥ पाप अरु पुण्य दुख सुख को विहंडन है आनद को मंडन रकार उर आनि लै। ताहिते कहत है कवीर तीनअंक जोरि, मोरि स्वासइंगला औ पिंगला में तानि लै७७

मूल

केवलंकेवलानंदं, बिभवंभवनाशनं ॥
आरोपनंचिदानन्दं,यत्कबीरस्सचोच्यते७८

टीका

द्वैत मत खंडन अद्वैत भाव मण्डन है, सगुन विहंडता बढ़ावत ककार यह । विभव बढ़ावन कढ़ावै भवसागर तें, सुमति वढ़ावन बकार यह सार यह ॥ चित्त चिदानन्द भवफन्द को निकन्द दुख, दारिद सुछन्द कन्द आनँ-द रकार यह । ताहिते कहत हैं कवीर तीन अंक जोरि, नेक मोरिदेख काम वन को कुठार यह ॥ ७८ ॥

मूल

कर्मणामनसा बाचा, विहरतं निजालयं ॥
रतिरंतर्गतंमृत्यं, यत्कबीरस्सचोच्यते ७९

टीका

मन बच कर्मन कषाय मल धोयनीके, जगमाहि करैनित्य ककाही सो प्रीतिरे । बा हरि के बिबिधि बिहार जानि फीके सति,

लोक को बिहार बबा अंतर में जीति रे ॥ रति मति गति जगमाहि जे करत नेक, सांची रति अंतर रकार रस रीतिरे । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंकजोरि, नेक मोरि देख जिनि वृथा दिन वीतिरे ॥ ७९ ॥

कलौ कीर्तन संलाप, बिबेक ज्ञान संहितं ॥
रागायुतहुतावाता, यत्कवीरस्सचोच्यते ८०

कलि के कलेश काटिवेको गाये क काहीको, बबाहै बिशेष ज्ञान ध्यान करतार यह । राग अनुराग झूठे जगमाहिं लावे मति, करिसाँची रतिहिये रटत रकार यह।काहे को झंखत हैं फिरत वापी कूपन को, धायकै न हाय घाट गंगाजीकी धार यह । ताहितें कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि मोरि देखतेरे हिये ज्ञन कार यह ॥ ८० ॥

मूल

कोशकाव्यसमाहारो, विनाक्तिअविनाक्तिच
रेफसाहससंस्कारो, यत्कवीरस्सचोच्यते ८१

जान कवि चातुरी ककारही को नीकी

भांति, कहत संयोग औ वियोग सो वकार है। धारिवे को धीरज विदारवे को कामादिक, हृदय विचारवे को नीको सो रकार है॥ झूठो जग संगकरै ध्यान मांहिं भंग यातैं, दै दै ज्ञानरंग नीकै चित्त निरधार है। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि नेक मोरि देख सब कटत विकार है॥ ८१ ॥

मूल

कतिधा पाप संहर्ता, वित्तचित्त प्रबर्धनः।
राजीवलोचनंराम,यत्कवीरस्सचोच्यते८२

टीका

जिते जगमाहि किते पापनके पूर भरे, करे चूर चूर नेक कका के लगाये ते। चित्त की बिपत्ति केती फोरि डारी छिन मांहि, धरि धरि ध्यान वाहि बबा उर लाये ते॥ फूलत कमल दल लोचन छिनक मांहि, रटि २ राग त्यों रकार गुण गायेते। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, होय भव पार पूरो गुरू ढूढ़ पायेते॥ ८२ ॥

मूल

कोवावेत्तिविनायेन, कोविशेषोमहात्मवान।
कोवामायायाराहितो, यत्कबीरस्सचोच्यते

टीका

जानिवे जो चाहे तोपै जान एक क काही को, भयो जो विशेष चाहै बबा उर धारिलै । छूटो चाहे माया ते निहाल ह्वैकै जग माहिं, करि करि ध्यान त्यों रकार पन पारि लै ॥ जोपै जग माहिं आय युग२ जीयो चाहै काम क्रोध लोभ मद मोह को विदारिलै ताहिते कहत है कबीर तीन अंक जोरि, मोरि मोरि स्वाँस नादविन्दु को सँ-भारि लै ॥ ८३ ॥

मूल

केवलं परमानन्दं, वियोगं योग मुच्यते ।
रोगायहरणंनित्यं, यत्कबीरस्सचोच्यते८४

टीका

केवल अनन्द को समूह सोई कका यह, योग औ वियोग को बिहारी सो बकार है । जेते जगमाहि सव रोगन की जाति पाँ-

ति, होय खंड २ ध्यान धरत रकार है ॥
आसन विचारो पान भोजन विचारो सैन,
जागृत विचारो जग बिविधि बिकार है।
ताहिते कहत है कबीर तीन अंक जोरि, मोरि
क्योंन देखै हिये झूठो सनसार है ॥ ८४ ॥

मूल

कालव्याल प्रबंधश्च, बेदमंत्र मुदाहृतम् ॥
रात्रान्हियोगयुक्तंच, यत्कबीरस्सचोच्यते८५

टीका

काल रूपी व्याल ताने केतिक विनाश डारे, सुरनरमुनि गंधरव को ककार यह। वही निज मंत्र तंत्र वेदन में गाय गाय, धाय धाय लागे जासो सोइ है बकार यह ॥ वही दिन रात मास पच्छ घटिका का भाग वही सूर चन्द तारा गण में प्रकार यह। ताहिते कहत हैं ,कबीर तीन अंक जोरि, मोरि क्यों न देखो तेरे हिये ततकार यह ॥ ८५ ॥

मूल

कृतपदगुणातीतं, बितृष्णा ध्याननिर्मलं ॥
राजतेअमरःपार्श्वं, यत्कबीरस्सचोच्यते८६

टीका

बिन पगधावै बिना यंत्रही बजावे तार गिरा बिन गावेसो लहावे करतार कबि। तीषना कें बिबिधि पहारन को फोरिडारें, सब करि ध्यान भयो निर्मल वकार कबि ॥ अम रहि लोक अरु अमरहि नाम जाको, अमर बिहार वन वाहीहै रकार कबि। ताहिते क हत हैं कबीर तीन अंक जोरि, नेक मुरैहिये भवसागर के पार कवि ॥ ८६ ॥

मूल

करणंकारणं कर्तृन्, बिहारं सुखसागरं ॥
रहितःसर्वपापेभ्यो,यत्कबीरस्सचोच्यते ८७

टीका

करण कहावे वही कारण कहावे वही, करता कहावे वही जानो जो ककार है। सुख के समुद्रमाहिं करत बिहार वही, नि राधार औ आधार सोइ तो वकार है ॥ पाप ना लगत जासूँ जाप के करेते नित, अति ग ति भाव भन्योरहत रकार है। ताहिते कहत

हैं कबीर तीन अंक जोरि, याही कूँनिहारि जगझूठो व्यवहार है ॥ ८७ ॥

मूल

कृतंसत्य यथा मार्गं, बीजयेत्य जपाजपं ॥
भक्तिमुक्तिरतिश्चैव,यत्कबीरस्सचोच्यते८८

टीका

सांचो सांचे पंथ को चलावत है नीकी भांति, झूठे झूठे मारग विदारत ककार यह। अजपा जो आप ताहि जपि जपि आठो याम, थपथपि भावना सो कामना वकार यह ॥ भक्ति अरु मुक्ति के विलास हास जानि २, मानि २ मनहि मनावत रकार यह । ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंकजोरि, नेक मुरि देखि हिये मोतिन को हार यह ॥ ८८ ॥

मूल

कपाटं तिमिरश्चैव, सप्त बेद विसारदः ।
मंगलायबिनोदश्च, यत्कबीरस्सचोच्यते८९

टीका

कपट कपाट तन पटल विडारिवे को,

दारिवे कोकका काम ध्वज शूर बीर है। वेदन के जेते साते अंग है विविधि भांति, तिनके संवारिवे को ववारण धीर है॥ मंगल समूह केते आनँद समूह जेते, धरत रकार सोई हरै पर पीर है। ताहितें कहत है कबीर तीनि अंकजोरि, मोरि २ तोलि खोलि हिये में जंजीर है॥ ८९॥

मूल

कृत शास्त्रज्ञ तत्वज्ञ, विभेदं अघ सूदनं॥
सर्वसिद्धिमवाप्नोति,यत्कबीरस्सचोच्यते९०

टीका

जेतेश्रुति सार जेते तत्व के विचार जेते, कहे हैं प्रचार सव ककाहीमें मानिलै। अघको हरण हार वेदको धरण हार, भाव को भरण हार ववाही को जानिलै। सिद्धन को दाता वही बुद्धि को विधाता वही, सव जग जाना है रकार उर आनिलै। ताहिते कहत हैं कवीर तीन अंकजोरि, मोरि जग रीति प्रीति वाहिसो तू ठानिलै॥ ९०॥

मूल

कायासिद्धिमवाप्नोति, दयासिद्धिविवर्धनं॥
भक्तिवृद्धिकृतोयेन,यत्कबीरस्सचोच्यते९१

टीका

कायाही की सिद्धि सो ककार मांझ जानि लीजै, दयाहू की सिद्धि सो बकार माहि जानिये। भक्ति को वढ़ौनि ज्ञान ध्यान को बढौनि चित्त चेतन चढौनि सोरकारही में मानिये॥ दया उर धारि काहू जीवना बिदारि हरे,हरे पग धरि पूरा गुरू चित्त आनिये। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २ स्वाँस त्रिकुटी को ताकि तानिये॥ ९१॥

मूल

सर्वलोक हितार्थायं, सतुष्ठ विदधातथा॥
रचिताभक्तिदाम्नावा:यत्कबीरस्सचोच्यते९२

टीका

लोक सुखदाई दुखदाई है न आठोयाम, संतन को भाई गुण सोई है ककार यह। सदाही प्रसन्न वह जगकी हरतपीर, नेकनअ-

धीर शूर वीर सो वकार यह ॥ भक्तन की दास रचि उर लावे आप हरै, जगही के पाप चित्त चेत निरकार यह । ताहि ते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, नेक मुरि देखै सोई होय भव पार यह ॥ ९२ ॥

मूल

केशवोज्ञानदाताश्च, विज्ञान प्रवरःशुचिः ।
रोहणंचपरंधाम्ना, यत्कबीरस्सचोच्यते ९३

टीका

जेते गुण ज्ञान ध्यान दाता है ककार कवि, कहत बिज्ञान तासों प्रवर बकार है । परम पवित्र जासूँ कहत है धाम कवि, होत पूरो काम नाम लियेते रकार है ॥ गाफिल न होय जग डारे अघ धोय सब, लैलै वाहि नाम केते भये भवपार है । ताहिते कहत है कबीर तीन अंक जोरि, मारि २ देख गाय गाय गुण सारहै ॥ ९३ ॥

मूल

कविंपुराणवपुषां, विदेहोदेहवान्नसुधिः ॥
गुरुर्योगेश्वरानांच, यत्कबीरस्सचोच्यते९४

टीका

कबि के कबित माहिं राजत है नीकी भाँति गाजत पुराण माहिं कका करतार है। देहबिन डोले देहवान सो दिखाई देहि, चित हरि लेहि चाय चाय सो बकार है॥ योगी यती जंगम औ सेवरा कहे हैं जेते, केतक गुरूको रूप जानिलै रकार है। ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, नेक मोरि देख तौ पै दीषै वार पार है॥ ९४॥

मूल

कृतं सत्य परंश्रेष्ठं, बिचित्रं हंसनायकं॥
रोषशोकहतायेन, यत्कबीरस्सचोच्यते ९५

टीका

यज्ञ में वही है सांचे भाव में वही है अति, श्रेष्ठ मैं वही है जासूँ कहत ककार है। चित्र औ बिचित्र रमिरह्यो यत्र तत्र वही, जासो पर्महंस कहै सोई जो बकार है॥ शोकको हरनहार रोषको हरणहार, दोषको हरणहार जानिलै रकार है। ताहिते कहत

है कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २ देख धाय धाय धार २ है ॥ ९५ ॥

मूल

कोष्टारंसर्वसिद्धीनां, विवेकज्ञानसम्भवः ॥
रविरंसुमतालोके, यत्कबीरस्सचोच्यते ९६

टीका

सिद्धिनको राजा सब रिद्धिनको राजा नव, निद्धिन को राजा राजै प्रगट ककार जू । ज्ञान औ विज्ञान औ विवेक कूँ वढावन है, ध्यान को मढ़ावन है वावन वकार जू ॥ रवि कोसो तेज निशि दिन जगमगे जामें रगमगे जगमाहिं रंतित रकार जू । ताहिते कहत हैं कवीर तीन अंक जोरि, मोरि २ देखि याहि होय भवपार जू ॥ ९६ ॥

मूल

कुरु संयुगं योजनं, विशेषंएकदेशकं ॥
रुणत्कारंदिवारात्रौ,यत्कबीरस्सचोच्यते ९७

टीका

दरजनि जानौ युग कोस है प्रमानौ

धाम, एक कहै यांजन विराजै सो ककार
यह। एक कहै देश वाको न्यारोही बिराजै
सदा। एक कहै एक देश विविधि बकार
यह, रुनुक झुनुक झनकार रहै आठो याम,
सोई निज धाम जासो कहत रकार यह।
ताहिते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि,
नेक मोरि देखि हिये होत किलकार
यह॥ ९७॥

मूल

कंजनंतजपुंजश्च, विकारंनिर्विकारकं॥
ऋषिणांमाश्रमपदं,यत्कबीरस्सचोच्यते९८

टीका

वाहीतेज पुंजकंज कंप करै आठो याम,
हरै अघ पंक न कलंक है ककार मांझ।
विबिध विकार को विदारिडारै छण माहिं,
दिन माहिं रैन माहिं बंकित बकार मांझ॥
जेते ऋषी मुनी यती योगी हैं जगतमांझ,
तिनको परमधाम जानिलै रकारमांझ। ता-
ही ते कहत हैं कबीर तीन अंक जोरि, मोरि २
देखिढकि दुरियों अकार मांझ॥ ९८॥

मूल

कोलाहलघटाटोप,आधिव्याधिविनाशनं।
रविमण्डलमूर्तोर्ण्यं,यत्कबीरस्सचोच्यते९९

टीका

अति घनघोर सोर घन सो गराजि रहै। च-
न्द सो दराजि रहै रंजित ककार यह। आधि
को विनाशै सब व्याधिको बिनाशै काम,
क्रोध अघ फाँसै सोई विविधि वकार यह ॥
रविको सो मंडल है तेज पुंज खंडल है, वि-
द्युत विहंडल है डंडल रकार यह। ताहिते
कहत हैं कबीर तीन अंकजोरि मोरि २
देख हिये हाजिर अकार यह ॥ ९९ ॥

मूल

कूर्मासश्चधराधीशो, शेषश्चस्वयंप्रभुः ॥
आधारंसर्वभूतानां,यत्कबीरस्सचोच्यते१००

टीका

कूरम वहीहै शेषनाग सो वही है धरा,धर
सो वही है जासो कहत ककार है। शेष
अवशेष वन बीहड नदी हैं जेती, सात हू स-

मुद्र तिनै जानि लै बकार है ॥ वही निराधार और अधार सव जीवन को, बिविधि विहार करै जग मैं रकार है । ताहितें कहत है कवीर तीन अंक जोरि, नेक मुरि देखि सोई राजत लिलार है ॥ १०० ॥

मूल

कविनांप्रवरोज्ञाता, ध्यातामातापितांवह ॥
जनकःसर्वलोकानां,यत्कवीरस्सचोच्यते१०१

टीका

कवि हैं जेतक जग माहि बड़े बुद्धिमान तिनको अधीस ईस जानियो ककार है । धाता जो वही है पिता माता जो वही है, बुद्धि भ्राता हू वही है जासो कहत बकार है ॥ जग को जनेता सव अघ को हनेता काम, क्रोध को हरेता जग राजत रकार है । ताहितैं कहत हैं कवीर तीन अंक जोरि, मोरि २ देखि निशिदिन झनकार है ॥ १०१ ॥

॥ इति कवीर एकोत्तर शतक ॥

मूल

त्रयाणांमक्षराणांच, निर्णयंकथितस्तवं ।
सामवेदोद्भवंदेवी, गुह्यागुह्यतरंपरं ॥

टीका

तीन्यो जे अंक ते निशंक ह्वै सुनाये शिव, आपने त्रियाको निज हित चित जानि कै। न्यारे २ अंक तेऊ एक कै दिखाय दिये, गाये सामबेद मांझ दिनसांझ आनि कै ॥ गुप्त तैं गुपुत सो प्रगट कै बतायो रुद्र, गायो युग युग संत साखी मनमानि कै । धन्यो उर देबी जामैं बिबिधि उपासना हैं, सब शिरमौर राख्यौ बीन २ छानि कै ॥ २ ॥

मूल

एकोत्तरशतभद्रे, कबीरस्यमहात्मनः ॥
येपठंतिचशृण्वंति, तेयांतिपरमंगतिं ॥ ३ ॥

टीका

एकोत्तर शत कह्यो साहब कवीर जू को, सुनै तू महातम को नाहीं वार पार है । प्रात उठि पढ़ै जो पै सुनै चित लाइ जोई, सोई सांचो साध जो अगाध मतसार है ॥ ज्ञान को उ-

जागरो सो जगको पसारो देखै, लोक तिनुका लैं लेखि ह्यि को बिचार है। जाय कै परमपद फिरि जग आवै नाहिं, सही यही वात धार धार निरधार है ॥ ३ ॥

सोरठा।

चन्द चूड़ निज मूल, रचिपाचि कियोकवीर सत।
टीका तेहि सम तूल, अखयराम भाषा करी १॥

कवित्त

सम्बत् अठारह सै गियारह के मध्य भाषी कार्तिक की पंचमी सुदीसै रविबार है। नगर भरथपूर वृज की करौट आहि, ताहि माहिं वैठ कियो ग्रन्थको प्रकाश है॥ स्वामी दया-नन्द जू के बाल हरि दास भये, ताके श्याम दास को भिखारी दास दास है। साहब कबीर की कृपा ते अखै राम कही भाव दीप दीप-का समुझ गुरु पास है॥

इति श्री ब्रह्म यामले पाताल खंडे उमा-महेश्वर संवादे साम बेद शाखा वर्णनं त्रिपदाक्ष निर्णयं कवीर एकोत्तर शतकं समाप्तं॥इति॥